पुस्तक परिक्रमा– 1

आतंकवाद पर भारतीय मीडिया के दृष्टिकोण का विश्लेषण

पुस्तक : आतंकवाद और भारतीय मीडिया
लेखक : प्रो. राकेश सिन्हा
शोधार्थी और लेखन सहयोगः श्री मनमोहन शर्मा, श्री प्रियदर्शी दत्ता और श्री राजीव कुमार
प्रकाशक : भारत नीति प्रतिष्ठान, डी–51, हौज खास, नई दिल्ली–16
संस्करण : प्रथम
कीमत : 80.00 रू0

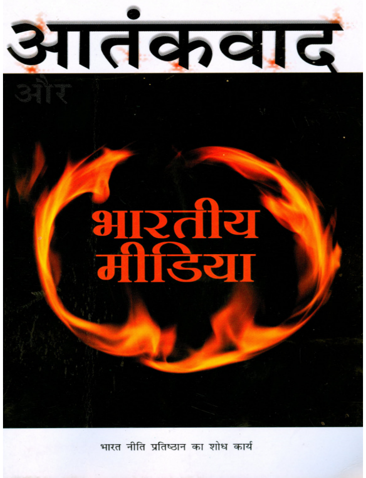

भारत नीति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक आतंकवाद पर विभिन्न समाचार पत्रों के दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन है। जो मीडिया में व्याप्त दोहरेपन एवं साम्प्रदायिक चश्मे से देखने की प्रवृत्ति को तथ्यों व प्रमाणों के आधार पर उघाड़ता है। इसमें मीडिया के एक विशिष्ट राष्ट्रीय दृष्टिकोण रखने वाले वर्ग के प्रति गहरे विद्वेष और पूर्वाग्रह की भी स्पष्ट झलक मिलती है। पुस्तक के पहले तीन अध्यायों में क्रमशः बाटला हाऊस एनकाउन्टर, मुम्बई पर आतंकी हमलों और अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री ए.आर. अन्तुले के विवादास्पद बयान का विश्लेषण है। प्रत्येक अध्याय के तीन–तीन खण्ड हैं जिनमें अंग्रेजी, हिन्दी एवं उर्दू समाचार पत्रों के दृष्टिकोंण का अध्ययन किया गया है।

बाटला एनकाउन्टर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी समाचार पत्रों ने प्रायः स्वतंत्र व निष्पक्ष रूप अपनाया और जांच के बाद इसे पुलिस की बड़ी सफलता माना, जबकि उर्दू के पत्र एनकाउन्टर में मारे गये आतंकवादियों को बेकसूर कहते रहे और मोहनचंद शर्मा को शहीद मानने से इनकार करते रहे।

मुम्बई आतंकी हमले पर हिन्दी और अंग्रेजी समाचार पत्रों ने आतंकवाद पर 'अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग' को आवश्यक माना और पाकिस्तान द्वारा आतंकवाद को संरक्षण देने, आई.एस.आई. तथा आतंकवाद पर पाकिस्तानी रवैये की जमकर आलोचना की। जबकि अधिकांश उर्दू पत्रों ने मुम्बई हमले को मांलेगांव जांच–प्रकरण से जोड़कर तथ्यविहीन पत्रकारिता का परिचय दिया।

इसी प्रकार हिन्दी और अंग्रेजी समाचार पत्रों ने 26/11 के दौरान एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे की हत्या पर केन्द्रीय मंत्री ए.आर. अंतुले के काल्पनिक आरोप को एकमत से खारिज कर इस पर रोषपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त की है जबकि उर्दू अखबारों ने अन्तुले के बयान को अपनी अभिव्यक्ति का अधिकार कहकर जरूरत से ज्यादा उछालने की कोशिश की।

पुस्तक के चौथे अध्याय में मीडिया के राष्ट्रीय दृष्टिकोण और सामाजिक सरोकार पर दृष्टि डाली गयी है तथा अन्त में अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों को रेखांकित किया गया है। इसके अलावा इस पुस्तक में 'इंडिया टुडे' का बाटला हाऊस अभियुक्तों से साक्षात्कार, शहीद मोहन चंद शर्मा को अशोक चक्र, जंतर–मंतर पर उलेमा काउंसिल की रैली, मुम्बई हमले में जिंदा पकड़ें गए एकमात्र आतंकवादी 'कसाब की कहानी' और आतंकवाद विरोधी कानूनों का भी संक्षेप में विवरण दिया गया है।

पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता घटनाओं के प्रवाह को तिथियों और तथ्यों को संदर्भ के साथ प्रकाशित किया जाना है। इसमें आतंकवाद से जुड़ी राज्यों की एजेंसियों और पुलिस जांच प्रक्रिया में मीडिया की उत्तरदायित्व की समीक्षा भी की गयी है। यह अध्ययन आतंकवादी घटनाओं का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि आतंकवाद पर भाषायी पत्रकारिता के बदले दृष्टिकोण का आईना भी है। किसी खास भाषा के अखबारों का किसी खास विचारधारा का प्रतिनिधि बनना लोकतंत्र एवं सर्वपंथ समभाव दोनों के लिए क्षतिकारक साबित हो सकता है।

नई दुनिया के प्रधान संपादक श्री आलोक मेहता, सीबीआई के पूर्व निदेशक श्री जोगिन्दर सिंह और बाटला हाऊस मुठभेड़ के शहीद स्व. मोहनचंद शर्मा की पत्नी माया सिंह ने 10 मार्च को इस अध्ययन की रिपोर्ट का लोकार्पण किया। समारोह की अध्यक्षता भारत नीति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डा. बजरंग लाल गुप्ता ने की। एक सौ छप्पन पृष्ठों वाली इस पुस्तक की कीमत अस्सी रूपये है।